بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 27 मार्च 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(अमान महीने की तिथि 27,1405 हश)

तौहीदे इलाही के तनाज़ुर में सीरते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ईमान अफ़रोज़ तज़किरा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-27.03.2026

محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب،143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरः अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसूहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत के संदर्भ में तौहीद (एकेश्वरवाद) का ज़िक्र हो रहा था। फ़तह-ए-मक्का के समय बुतों को गिराने की तफ़सील पिछले ख़ुत्बों में बयान हो चुकी है। यह सब कुछ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तौहीद के ऐलान के तौर पर किया था, यानी जिन बुतों की तुम इबादत करते हो, उनका तो यह हाल है। अहल-ए-ताइफ़ के बुत 'लात' के बारे में एक रिवायत मिलती है कि उन्होंने यह दरख़्वास्त की थी कि इस बुत को तीन साल तक न तोड़ा जाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ैरत-ए-तौहीद ने यह समझौता क़बूल नहीं किया। अहल-ए-ताइफ़ ने एक साल और फिर एक महीने तक इस बुत को न गिराने की सिफ़ारिश की, मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस दरख़्वास्त को भी क़बूल नहीं किया और उस बुत को गिरवा दिया।

हज़ूर फ़रमाते हैं: नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न सिर्फ़ मक्का के मुशरिकीन का मुकाबला करके काबा को बुतों से पाक किया, बल्कि मुसलमानों के दिलों में भी तौहीद को मज़बूती से कायम किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा की ऐसी आला तरबियत फ़रमाई कि उनके दिलों में शिर्क का कोई ख़याल भी पैदा न हो सका।

हज़रत इब्न-ए-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मिम्बर पर यह कहते हुए सुना कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि मेरी तारीफ़ में बढ़ा-चढ़ाकर बात न करो, जैसे नसरियों (ईसाइयों) ने मसीह की तारीफ़ में हद से बढ़कर किया था। मैं तो सिर्फ़

अल्लाह का बंदा हूँ। इसलिए तुम कहो: अल्लाह का बंदा और उसका रसूल। एक मौके पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तुम्हें मना करता है कि तुम अपने बाप-दादाओं की क़सम खाओ। जिसे भी क़सम खानी हो, वह अल्लाह की क़सम खाए या फिर चुप रहे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह बिल्कुल मंज़ूर नहीं था कि अल्लाह की तौहीद के सामने किसी भी चीज़ को ज़रा सा भी बराबरी में रखा जाए।

एक सहाबी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि अगर जंग में दुश्मन मेरा हाथ काट दे और फिर फ़ौरन कलमा पढ़ कर इस्लाम क़बूल करने का एलान करे, तो क्या मैं उसे क़त्ल कर सकता हूँ? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: नहीं, उसे क़त्ल मत करो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे वज़ाहत फ़रमाई कि अगर तुम उसे कलमा पढ़ने के बाद क़त्ल करोगे, तो वह (कलमे की वजह से) तुमसे बेहतर हालत में हो जाएगा और तुम उससे बदतर हालत में चले जाओगे। हुज़ूर फ़रमाते हैं: पस जितने सहाबा थे पुराने, उन्होंने भी अगर कोई ऐसी हरकत की तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे सख्त बुरा माना। लेकिन आजकल के उलमा का हाल देखें। पाकिस्तान में अहमदियों को कलमा पढ़ने के बावजूद जिस ज़ुल्म का निशाना बनाया जाता है उसकी कोई इंतिहा नहीं। इन ज़ुल्म करने वालों का फ़ैसला इस रिवायत में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमा दिया है। बहरहाल अब इस मुल्क के शिद्दत पसंद मौलवियों के पीछे चलने वाले लोगों को ग़ौर करना चाहिए।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे तुम पर सबसे ज़्यादा जिस चीज़ का ख़ौफ़ है वह शिर्क-ए-असग़र है यानी रियाकारी (दिखावा)। क़यामत के दिन जब लोगों को उनके आमाल का बदला दिया जाएगा तो अल्लाह तआला उन (रियाकारों) से फ़रमाएगा कि उन लोगों के पास जाओ जिनके लिए तुम दुनिया में दिखावा करते थे। उन्हीं के पास जाओ और देखो कि क्या तुम्हें उनके पास कोई बदला मिलता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला बयान फ़रमाता है कि इब्न-ए-आदम मुझे झुठलाता है और मेरी शान में गुस्ताख़ी करता है, हालाँकि यह उसके शायान-ए-शान नहीं। उसका झुठलाना यह है कि वह दोबारा पैदा किए जाने का इनकार करता है, जबकि जिस तरह अल्लाह ने उसे पहली बार पैदा किया, उसी तरह दोबारा पैदा करना भी उसके लिए आसान है। और उसकी गुस्ताख़ी यह है कि वह अल्लाह के लिए बेटे का अक़ीदा रखता है, हालाँकि अल्लाह तआला हर क़िस्म की हाजत से पाक, बेनियाज़ और यकता है।

सूरह इख़लास की वज़ाहत करते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि: अल्लाह वह हस्ती है जिसके सब मुहताज हैं और वह किसी का मुहताज नहीं। इस बेहद मुख़्तसर इबारत को जो एक सतर से भी कम है, देखना चाहिए कि किस लताफ़त और ख़ूबसूरती से हर एक क़िस्म की शराकत से अल्लाह तआला की ज़ात के पाक होने को बयान फ़रमाया गया है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूरह इख़लास को सुल्स-उल-क़ुरआन क़रार दिया है यानी क़ुरआन का तीसरा हिस्सा। हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस हवाले से फ़रमाते हैं कि इससे मुराद यह है कि इस सूरह इख़लास का मज़मून ख़ास अहमियत (महत्त्व पूर्ण विषय) रखता है। क़ुरआन करीम और अहादीस के मुताले से मालूम होता है कि आख़िरी दौर में दो बड़े फ़ितने पैदा होने थे — एक दज्जाली फ़ितना और दूसरा याजूज माजूज। इन दोनों फ़ितनों ने एक के बाद दूसरे ने इस्लाम से टक्कर लेनी थी। एक फ़ितना ख़ुदाए वाहिद की बजाए तीन ख़ुदाओं का अक़ीदा लिए हुए है यानी ख़ुदा बाप, ख़ुदा बेटा और ख़ुदा

रूहुल-क़ुदुस। दूसरा फ़ितना दहरियत का है यानी वह सिरे से ख़ुदा का मुनकिर है। क़ुरआन करीम ने इन दोनों फ़ितनों के अक़ाइद की तरदीद की है। क़ुरआन करीम ने सिर्फ़ ख़ुदा बाप यानी ख़ुदाए वाहिद की ख़ुदाई को क़ायम किया है और ख़ुदा बेटे और रूहुल-क़ुदुस की सख़्ती से नफ़ी और तरदीद की है। गोया क़ुरआन करीम ने तीन ख़ुदाओं में से सिर्फ़ एक ख़ुदा यानी ख़ुदाए वाहिद व यगाना की हक़ीक़ी ख़ुदाई को क़ायम फ़रमाया है। और यह साफ़ बात है कि चूँकि ख़ुदा बाप की ताईद क़ुरआन करीम का तीसरा हिस्सा है, इसलिए यह सूरह इख़लास क़ुरआन करीम का तीसरा हिस्सा बनती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि तौहीद यक़ीनी महज़ नबी के ज़रिए से ही मिल सकती है। जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरब के दहरियों और बदमज़हबों को हज़ारहा आसमानी निशान दिखला कर अल्लाह तआला के वजूद का क़ायल कर लिया।

फ़रमाया: आज इस ज़माने में याजूज माजूज और दज्जाल तो एक तरफ़, ख़ुद मुसलमानों के अंदर भी असल हक़ीक़ी तौहीद का अदराक नहीं रहा। पस इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम मसीह मौऊद और महदी मौऊद ने आना था और वह आया और उसने तौहीद के ख़िलाफ़ हर हमले का मुक़ाबला किया। पस हक़ीक़ी बैअत का हक़ हम तभी अदा कर सकते हैं जब हम हक़ीक़ी तौहीद को मानने वाले हों। तौहीद के आला मक़ाम के मुतअल्लिक़ एक दफ़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा से अर्ज़ किया कि ऐ ख़ुदा! मुझे कोई ऐसी चीज़ सिखा दे जिससे मैं तेरा ज़िक्र भी करूँ और तुझसे दुआ भी करूँ। ख़ुदा ने कहा कि ऐ मूसा! कहो — لَا اِلٰہَ اِلَّا (ला इलाहा इल्लल्लाह)। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा कि ऐ ख़ुदा! तेरे सब बंदे यही कहते हैं। ख़ुदा ने यही कलमा कहने का दोबारा इरशाद फ़रमाया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के इसरार पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ऐ मूसा! अगर मेरे सिवा दुनिया की सब चीज़ें एक पलड़े में रख दी जाएँ और सातों ज़मीनें एक पलड़े में रख दी जाएँ और दूसरे पलड़े में ला इलाहा इल्लल्लाह को रखा जाए — तो ला इलाहा इल्लल्लाह सब चीज़ों पर भारी हो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं कि हज़रत मुक़द्दस नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीम यह है कि कलमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहने से गुनाह दूर हो जाते हैं। यह बिल्कुल सच है और यही वाक़ई हक़ीक़त है कि जो महज़ ख़ुदा को वाहिद लाशरीक जानता है और ईमान लाता है कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसी क़ादिर व यकता ने भेजा है — तो बेशक अगर इसी कलमे पर उसका ख़ातमा हो तो वह नजात पा जाएगा।

एक मौक़े पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह एक है, उसका कोई शरीक नहीं — और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बंदे और उसके रसूल हैं — और यह कि ईसा अलैहिस्सलाम उसके बंदे और उसकी बंदी के बेटे हैं, और उसका कलमा हैं जो उसने मरयम की तरफ़ अल्क़ा (नाज़िल) किया, और उसकी तरफ़ से एक रूह हैं — और यह कि जन्नत हक़ है और जहन्नम हक़ है तो अल्लाह उसे जन्नत के आठ दरवाज़ों में से जिससे चाहेगा दाख़िल करेगा।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर मौक़े पर तौहीद को बयान किया और उम्मत के दिलों में बिठाने की कोशिश की। हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के मुताबिक़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह की अज़मत बयान करने का इस क़दर शौक़ था कि मुख़ालिफ़ीन भी इसका एतराफ़ करते थे। एक फ़्रांसीसी मुअर्रिख़ ने भी लिखा कि एलान-ए-नबुव्वत से लेकर वफ़ात तक आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की ज़बान पर हमेशा अल्लाह का ज़िक्र रहा — गोया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक़सद सिर्फ़ अल्लाह को दुनिया में मनवाना था। हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक जगह फ़रमाया है कि यह ख़याल रखना चाहिए कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान ख़्वाह कितनी ही बुलंद हो और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हमें कितनी ही मुहब्बत हो — अल्लाह तआला की शान बहरहाल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान से बहुत बाला (सर्वोत्तम) है। ख़ुदा तआला अज़ली अबदी है और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके फ़ैज़ानों में से एक बहुत बड़ा फ़ैज़ान हैं — और यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात से दुश्मनी होगी कि हम आपको कोई ऐसा मक़ाम दे दें जिसके देने से अल्लाह तआला का मक़ाम छिनता हो। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तौहीद के क़याम का इस क़दर ख़याल था कि जांकनी की हालत में भी बार बार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुँह से यह कलमात निकलते थे कि: ख़ुदा यहूद व नसारा पर लअनत करे कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बार बार यही फ़रमाते थे। गोया क़ौम को आख़िरी नसीहत और आख़िरी पैग़ाम जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिया वह यही था कि — मुझे मुशरिकाना मक़ाम न देना।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस बात का हमें ख़याल रखना चाहिए कि हम तौहीद की हक़ीक़त का अदराक पैदा करके, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तौहीद के क़याम के लिए दर्द को समझ कर ,इसके लिए पूरी कोशिश करके — हक़ीक़ी मुवह्हिद बनें।अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। آمین (आमीन) ख़ुतबे के इख़ततताम पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अमेरिका और इसराईल ईरान के ख़िलाफ़ जंग के ज़रिए दुनिया — ख़ुसूसन मुसलमान मुमालिक — पर अपनी बालादस्ती क़ायम करना चाहते हैं, जिससे हालात मज़ीद ख़राब हो रहे हैं। नुक़सान तो बीच में अरब मुल्कों का भी हो रहा है। आपने मुसलमानों को ख़बरदार किया कि वह इस सूरतेहाल को समझ कर मुत्तहिद हों। पाकिस्तान की सुलह की कोशिश के बावजूद ईरान के बअज़ हलक़ों में ग़लतफ़हमियाँ फैलाई जा रही हैं कि यह अमेरिका की मदद कर रहा है — जो कि बिल्कुल बेबुनियाद है। यह सब दुश्मन की साज़िश है ताकि मुसलमान मुमालिक में इख़तिलाफ़ रहे। अल्लाह तआला हमें इस लिहाज़ से भी दुआएँ करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और इस्लामी मुल्कों को वहदत की लड़ी में पिरोए जाने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131